Dr. R.N. Sharma
J.M.S. College, Mgr. स्नातककला, खण्ड-1, विषय - दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा) Paper-I

# चार्वाक दर्शन का नैतिक विचार (Ethical View of Charvaka Philosophy)

प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि उसका जीवन सुखमय एवं आनन्दपूर्ण हो। यही मनुष्य के जीवन का चरम लक्ष्य है। मूलत: मनुष्य एक बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक तत्वों से युक्त प्राणी है। परन्तु चार्वाक दर्शन में स्थूल सुखवाद का समर्थन नीतिशास्त्रीय आदर्श के रूप में प्रतिस्थापित किया गया है। इसके अनुसार व्यक्ति द्वारा इन्द्रिय-सुखों का उपभोग ही मानवजीवन का चरम लक्ष्य है। सामान्यत: भारतीय दार्शनिकों ने मनुष्य के जीवन में चार लक्ष्य- अर्थ (Wealth), धर्म (Virtue) काम (Enjoyment) और मोक्ष (Liberation) बतलाये हैं, जिसे पुरुषार्थ (Human ends) कहा जाता है। चार्वाक अर्थ और काम को जीवन का लक्ष्य स्वीकारते हुए धर्म और मोक्ष का खण्डन करता है। अब हम इस पर अलग-अलग विचार करेंगे।

मोक्ष का अर्थ है सभी प्रकार के दु:खों का अन्त। मोक्ष इस जीवन में भी मिल सकता है और इस जीवन के बाद भी मिल सकता है। चार्वाक मोक्ष के इस विचार का खंडन करता है। उसका कहना है कि मोक्ष का अर्थ है- मृत्यु और मृत्यु को जीवन लक्ष्य बनाना अनुचित है। जीवन तो सुख-दु:ख की आँख मिचौनी है। जबतक जीवन है- दु:ख भी रहेगा। सुख भी रहेगा। सम्पूर्ण दु:ख नहीं मिटाया जा सकता। इसलिए मोक्ष की कामना करना सर्वथा अनुचित है। भौतिकवादी दर्शन होने के कारण चार्वाक आत्मा की सत्ता को नहीं मानता है। जब आत्मा की सत्ता है ही नहीं तो मोक्ष की प्राप्ति किसे होगी? इस तरह चार्वाक दर्शन में आत्मा के खंडन के साथ-साथ मोक्ष का भी खंडन हो जाता है।

जीवन का दूसरा लक्ष्य है- धर्म। धर्म का अर्थ होता है- जो वेद सलाह दे, जो वेद के अनुकूल हो और अधर्म का अर्थ है- जो वेद विरोधी कर्म हो। चार्वाक का कहना है कि वेद, विरोधी कथनों से भरे हुए हैं। एक ओर वेदों में कहा गया है- 'अहिंसा परमो धर्म:'। दूसरी ओर उन्हीं वेदों में कहा गया है कि यज्ञ में की गयी हिंसा, हिंसा नहीं है। एक ओर अहिंसा को परम धर्म माना गया है और दूसरी ओर हिंसा की सलाह दी गयी है। क्या यह विरोधी कथन नहीं है? अत: आज वेदों की बातें मानने योग्य नहीं हैं। इसके अलावे वेद- धूर्त और निशाचरों की जमायत है। भला इतने फिरेहुए लोगों के उपदेशों पर चलना केवल मूर्खता है। अत: चार्वाक की दृष्टि में धर्म नहीं है, अधर्म नहीं है, पाप नहीं है, पुण्य नहीं है, उचित नहीं है, अनुचित नहीं है। मनुष्य का केवल एक ही धर्म है- सुख से रहना।

Scanned with CamScanner

चार्वाक की दृष्टि में अर्थ (wealth) का बड़ा महत्व है, यह वह साधन है जिसके द्वारा हम अधिक से अधिक सुख पा सकते हैं। मनुष्य के जीवन का एकमात्र लक्ष्य सुख की प्राप्ति है। इसलिए आर्थिक व्यवस्था मजबूत होनी चाहिए ताकि हम सुख को खरीद सकें। सुख की कामना हमारे स्वभाव में शामिल है। केवल हम नहीं, सम्पूर्ण मानव जाति सुख चाहती है। सुख की प्राप्ति के पीछे सम्पूर्ण दुनियां लगी हुई है। इसलिए सबसे बड़ा सत्य सुख है जिसे हमारा मन बराबर चाहता है। चार्वाक के इस विचार को मनोवैज्ञानिक सुखवाद कहा जा सकता है। सुख दो प्रकार के होते हैं - एक को निकृष्ट और दूसरे को उत्कृष्ट सुख कहा जाता है। चार्वाक सुख के सिलसिले में इस तरह का कोई भेद नहीं करता। उसकी दृष्टि में सभी सुख समान है। अच्छा-बुरा, निकृष्ट-उत्कृष्ट सुख नहीं होता। सुख केवल सुख होता है, सच्चा सुख इन्द्रियों से मिलता है। जो सुख विवेक से मिलता है, वह सच्चा एवं स्वाभाविक सुख नहीं है। वह कृत्रिम सुख है। चार्वाक की दृष्टि में सुख जैसा भी मिले - विशेष इन्द्रियों से स्वीकार किया जाना चाहिए। इस विचार को इन्द्रिय-जन्य सुखवाद कहा जा सकता है।

चार्वाक स्वार्थ सुखवाद का पक्षधर है। मनुष्य को चाहिये कि पहले वह अपने सुख की चिन्ता करे। दूसरों के सुख की चिन्ता जरूरी नहीं है। कभी-कभी भविष्य के सुख के लिए हम अपने वर्तमान सुख को त्याग कर देते हैं। चार्वाक का कहना है कि ऐसा करना सर्वथा अनुचित है। वर्तमान सुख ही सर्वोत्तम सुख है। बड़ी चिड़ियाँ कल मिलेगी इसके लिए हाँथ में आयी हुई हम छोटी चिड़ियाँ को उड़ा नहीं सकते। कल सुख मिलेगा इसके लिए हम कष्ट उठा नहीं सकते। इसलिए चार्वाक वर्तमान सुख के पक्ष में है। उनका कहना है कि अतीत बीत चुका, भविष्य अनिश्चित है। निश्चित केवल हमारा वर्तमान क्षण है। उस वर्तमान क्षण को छोड़ देना नीतिसम्मत नहीं है। कुछ लोग रोते हैं कि जिन्दगी में बहुत दुःख है। जिन्दगी केवल रोती ही नहीं, वह हंसती भी है। जिन्दगी सुख-दुःख की चूप छाया है। काँटे के भय से हम मछली खाना छोड़ नहीं सकते। हमारा कर्तव्य है कि हम दुःख पर उतना ध्यान न दें। अधिक से अधिक सुख के भोग में लगे रहें। यदि ऋण लेकर भी घी पीना पड़े तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु हम जबतक जिन्दा रहें, सुख से जिन्दा रहें। शरीर नष्ट हो जायेगा और नष्ट शरीर के साथ हमारी चेतना भी नष्ट हो जायेगी। हमारा फिर जन्म नहीं होगा। हम राख बन जायेंगे।

Scanned with CamScanner

कीड़े हमारे शरीर को खा जायेंगे। ऐसी हालत में जबकि सबकुछ नष्ट होने वाला है- एकही चीज भोगने लायक है और वह है हमारी जिन्दगी या अंतिम जिन्दगी। अतः सिद्ध होता है कि हमारे जीवन का लक्ष्य न केवल सुख है बल्कि सुख कोही होना चाहिए। मीमांसा कहती है कि इस जीवन के आगे भी एक जीवन है- जिसे स्वर्ग कहते हैं, जहाँ केवल सुखही सुख है। मीमांसा कहती है कि स्वर्ग जाने के लिए यज्ञ करना चाहिए और यज्ञ में बलिदान देना चाहिए। बलिदान का पशु भी स्वर्ग ही चला जाता है। चार्वाक का कहना है कि यदि बलिदान देने से बलि दिया हुआ पशु स्वर्ग चला जाता है तो बहुत अच्छी बात है। हमारे माता-पिता भी स्वर्ग जाना चाहते हैं। उन्हें स्वर्ग भेजने का अच्छा तरीका है कि उनका बलिदान कर देना चाहिए। चार्वाक का कहना है कि पंडे बड़े धूर्त हैं, भोली-भाली जनता को ठगते हैं- यह कह कर के कि श्राद्ध में दान की हुई चीजें मृतक को स्वर्ग में मिल जाती है। इस संबंध में चार्वाक का कहना है कि जो भोजन अपने से दो तल्ले तक नहीं जा सकता, वो भला अन्तरिक्ष में रहनेवाला मृतक को स्वर्ग में कैसे पहुँचायेगा। अतः वैदिक कर्मकाण्ड, स्वर्ग आदि का विचार उपनिषद के विचार नहीं है। सीधी-सादी जनता ठगी जाती है। चार्वाक का कहना है कि उन पंडों से बचना चाहिए, क्योंकि स्वर्ग और नरक कहीं भी नहीं है। स्वर्ग या नरक इसी दुनियां में है। जहाँ सुख है, वहाँ स्वर्ग और जहाँ दुःख है, वहाँ नरक। जो सुखदायक है, वह उचित और जो दुःखदायक है, वह अनुचित। कर्तव्य वही है जिससे सुख मिले और जिससे दुःख मिलता है, वह कम से कम कर्तव्य नहीं हो सकता।

इसतरह चार्वाक की नीति स्वार्थवादी है। चार्वाक मूल्य को नहीं मानते। उनके दृष्टि में सत्य वह है जो सुख दे और सुन्दर भी वही है जो सुखदायक है। इसप्रकार चार्वाक का दर्शन मूल्य विहीनता का दर्शन है। आदर्श विरोधी दर्शन है। मनुष्य पशु की तरह जिन्दा रहना चाहता है। चार्वाक का सुखवाद पाशविक सुखवाद है। चार्वाक दर्शन की इतनी आलोचना की गयी कि वह उससे प्रभावित होकर शिष्ट-चार्वाक तथा धूर्त-चार्वाक- दो दल में विभक्त हो गये।

चार्वाक की नैतिकता के संबंध में अन्य भारतीय दार्शनिकों ने कटु आलोचना की है जो निम्नलिखित है—

चार्वाक दर्शन का यह दोष नहीं है कि उसने ईश्वर को नहीं माना, आत्मा की अमरता को नहीं माना, स्वर्ग और नरक को नहीं माना। उसका दरअसल [redacted] दोष यह है कि उसने मानवजीवन को मूल्यविहीन एक ऐसा सुख का लक्ष्य जो मानवीय नहीं है। मनुष्य इन्द्रियजन्य सुख जरूर चाहता है, किन्तु मनुष्य होकर। जैसा कि किसी ने कहा है कि सभी विचारों के बीच मनुष्य को मनुष्य ही रहना चाहिए; विवेकपूर्ण आदर्श को पसन्द करनेवाला मनुष्य।

चार्वाक दर्शन के संबंध में दूसरा दोष यह है कि उसने नैतिकता का एक निश्चित मापदण्ड नहीं दिया। उसकी दृष्टि में जो सुख दे वह उचित और जो दुःख दे वह अनुचित। किन्तु चार्वाक को इस बात का ध्यान नहीं रहा कि जो एक के लिए सुख है, वह दूसरे के लिए दुःख हो सकता है। जो एक के लिए दुःख है, वह दूसरे के लिए ~~सुख~~ सुख हो सकता है। इस तरह से नैतिक मापदण्ड ~~व्यक्तिगत~~ व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होना चाहिए।

चार्वाक स्वार्थसुखवाद को महत्व देता है। किन्तु मनुष्य केवल स्वार्थी नहीं है, वह दूसरों का भी कम ध्यान नहीं रखता।

चार्वाक दर्शन की दृष्टि में सत्य वह है जो सुखकारी है, सुन्दर वह है जो सुखद। किन्तु चार्वाक भूल जाते हैं कि सत्य कभी-कभी सुखद नहीं होता है। सुन्दर भी बराबर सुखद है - जरूरी नहीं।

इस तरह स्पष्ट है कि चार्वाक दर्शन मूल्य विहीनता का दर्शन है। इसी कारण यह आलोचना का विषय रहा। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने आध्यात्मिकवादियों को हठ से बचा कर रखा। जिस तरह से हठवाद से बचाया है ह्यूम ने कांट को, उसी तरह से सम्पूर्ण भारतीय दर्शनों को चार्वाक दर्शन ने जगा कर रखा।

डॉ० राम नारायण शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
जे० आर० एस० कॉलेज, मुंगेर
मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर